नवरात्रि

17 अक्टूबर 2020 से 24 अक्टूबर तक

त्रिकालदर्शी बनने के लिए, भविष्य कथन के लिये करें

श्री पंचागुली साधना

भविष्य दर्शन तथा हाथ की रेखाओं की देवी पन्चागुली देवी है और जिसने यह साधना सिद्ध नहीं की वह सही रूप से न तो ज्योतिषी बन सकता है और न ही अपने स्वयं के भविष्य के बारे में देख सकता है, यह साधना सरल, दिव्य और सुगम है-

भारतीय ज्ञान-विज्ञान के अनमोल खजाने में एक महत्वपूर्ण साधना पंचागुली साधना है। यह भविष्य कथन की महत्वपूर्ण साधना है और जो ज्योतिष के क्षेत्र में है या भविष्यवक्ता हैं उनके लिये तो यह परम आवश्यक साधना है। यह न केवल उनके लिये बल्कि जन-सामान्य के लिये भी पर्याप्त उपयोगी साधना है। क्योंकि व्यक्ति यदि नौकरी में है तो इस प्रकार की साधना कर अपने अधिकारियों का प्रिय व सामिप्य प्राप्त करने वाला हो सकता है। व्यापारी अपने व्यापार में आने वाले उतार-चढ़ाव का अनुमान लगा सकता है और यूं भी आप अपने भावी जीवन की विसंगतियों को समय से पूर्व यदि जान जायें तो बचाव के आवश्यक प्रबन्ध कर सकते हैं। मेरा अनुमान है कि देश के जितने भी प्रख्यात ज्योतिषी थे या वर्तमान में हैं उन्होंने अवश्य पंचागुली साधना सिद्ध कर रखी होगी। क्योंकि शास्त्र का ज्ञान तो अगाध है और व्यक्ति अल्प जीवन में प्रयत्न करके भी कदाचित उसे सम्पूर्णता से अर्जित नही कर सकता, जबकि कोई देवी बल होने पर उसका वही कार्य सुगम हो जाता है।

व्यक्ति किसी दूसरे का भविष्य कथन करता है, तो उसमें आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिए, केवल गोल मोल बात कहने से भविष्य कथन की सार्थकता नहीं है और यह आत्मविश्वास तभी उत्पन्न हो सकता है जब उसने स्वयं कोई साधना अथवा सिद्धि प्राप्त की हो। साधना का बल ही उसका वास्तविक बल होता है जो उसे हाथ की रेखाओं अथवा जन्मकुण्डली का ज्ञान कराता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सामान्य व्यक्ति के लिए इस विशेष साधना की क्या उपयोगिता है, हर व्यक्ति अपने जीवन में आगे घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी के सम्बन्ध में उत्सुक रहता है, यदि आज आपको यह जानकारी हो जाय कि आने वाले समय में मेरे घर में बीमारी आने वाली है तो इस सम्बन्ध में आप उचित उपाय कर घटना की तीव्रता को कम कर सकते हैं, समय रहते ऐसा उपचार कर सकते हैं, कि जो दुष्प्रभाव आपको आकस्मिक रूप से मिलता है वह कम से कम बन पड़े। यदि व्यापार में आगे अच्छे योग और आर्थिक लाभ की जानकारी पूर्ण रूप से मिल जाय तो व्यापारी आदमी बड़ी रिस्क ले सकता है बड़ा पूंजीनिवेश कर सकता है और हजारों के लाभ को लाखों के लाभ में बदल सकता है।

पन्चांगुली साधना के पूर्ण जानकार ज्योतिषियों को तो उंगलियों पर गिना जा सकता है, जबकि पन्चांगुली साधना में सिद्ध साधक योगी कई हैं लेकिन वे प्रचार से मुक्त केवल अपने लिए ही इस साधना के श्रेष्ठ लाभ को उपयोग में लाते हुए अपना कार्य करते रहते हैं। जिस प्रकार भगवान पर या अपने इष्ट पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है, माना कि शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण को

पंचागुली साधना सिद्धि कवच–

पंचागुली साधना में सहायता के लिये अथवा जिन व्यक्तियों को पंचागुली साधना करने के पश्चात् भी अनुकूल फल नहीं मिल पाया है वे पंचागुली साधना सिद्धि कवच धारण कर सकते हैं। वर्तमान समय में पन्चांगुली साधना सिद्धि कवच की उपयोगिता तो विशेष है, जीवन में साधनाओं के अवसरों का जो भली भाँति उपयोग कर लेता है, वही सफल हो सकता है। जो जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है, उसे परिवार के सदस्य भी महत्त्व नहीं देते। आपका व्यापारिक सहयोगी आपके साथ भविष्य में कैसा बर्ताव करेगा, आपके अधिकारी से आगे आपके संबंध कैसे रहेंगे, कौन सी संतान जीवन में विशेष उन्नति करेगी, आगे जीवन में बीमारी कब-कब आने वाली है, पत्नी के साथ कैसे संबंध रहेंगे, कौन आपका सहयोगी है और कौन शत्रु, इन सबका ज्ञान पंचागुली साधना सिद्धि कवच से सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। जब एक बार पन्चांगुली साधना का निर्णय ले लें, तो उसे पूर्ण अवश्य करें, लेकिन उससे पूर्व पन्चांगुली साधना सिद्धि कवच अवश्य धारण कर लें।

कवच न्यौछावर दक्षिणा– 3000/–

साधना-सिद्धि प्राप्त होगी अथवा जिसके माता-पिता महान् हैं तो पुत्र को साधना करने से सिद्धि प्राप्त होगी मन, कर्म वचन से शुद्ध व्यक्ति भी साधना कर सिद्धि प्राप्त कर वास्तव में उस ईश्वर को धन्यवाद देता है कि तुमने मुझे जिस निमित्त बनाया मैंने उसका उपयोग किया है।

वर्तमान समय में पन्चांगुली साधना की उपयोगिता तो विशेष है, जीवन में साधनाओं के अवसरों का जो भली-भाँति उपयोग कर लेता है, वही सफल हो सकता है। जो जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है, उसे परिवार के सदस्य भी महत्व नहीं देते। आपका व्यापारिक सहयोगी आपके साथ भविष्य में कैसा बर्ताव करेगा, आपके अधिकारी से आगे आपके संबंध कैसे रहेंगे, कौनसी संतान जीवन में विशेष उन्नति करेगी, आगे जीवन में बीमारी कब-कब आने वाली है, पत्नी के साथ कैसे संबंध रहेंगे, कौन आपका सहयोगी है और कौन शत्रु, इन सबका ज्ञान पंचान्गुली साधना से सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।

आगे कुछ विशेष विवरण दिया जा रहा है, जो कि पन्चांगुली यन्त्र के निर्माण से सम्बन्धित है। ताम्र पत्र पर अंकित पन्चांगुली यन्त्र का निर्माण तथा उनकी प्राणप्रतिष्ठा प्रक्रिया गुरू के निर्देशन में सम्पन्न करनी चाहिए। और जब एक बार पन्चांगुली साधना का निर्णय ले लें, तो उसे पूर्ण अवश्य करें, नित्य प्रति मन्त्र जप में कुछ भी समय नहीं लगता है, मैं यह आशा करता हूँ कि आप सभी साधक पन्चांगुली साधना सम्पन्न कर अपने भविष्य दर्शन का नया मार्ग खोलेंगे।

पंचांगुली साधना- यह साधना किसी भी पुष्य नक्षत्र, ग्रहण काल, विजयादशमी, होली की रात्रि, दीपावली की मध्य रात्रि या नवरात्रि में कभी भी प्रारंभ की जा सकती है, परन्तु साधक को चाहिए कि वह पूर्ण विधि विधान के साथ इस नवरात्रि काल में इस साधना को सम्पन्न करें तो ज्यादा उचित होगा। मन्त्र जप किसी तीर्थ भूमि, गंगा यमुना का संगम, नदी, पर्वत गुफा या किसी मन्दिर में किया जा सकता है, साधक चाहे तो साधना के लिए घर के आस-पास किसी मन्दिर में, घर के किसी एकान्त कमरे में कर सकता है।

पन्चान्गुली यन्त्र- इस साधना में यह आवश्यक है कि नवरात्रि के शुभ समय में साधना स्थल को स्वच्छ पानी से धो लें, कच्चा आंगन हो तो गोबर से लीप लें, इसके पश्चात् चौकोर बाजोट पर धुला हुआ श्वेत वस्त्र बिछा दें और उस पर चावलों से अष्टदल का निर्माण करें।

इसके पश्चात् अष्टदल के मध्य में ताम्र कलश स्थापित करें और उस पर लाल वस्त्र आच्छादित कर ऊपर नारियल रखें और फिर उस कलश के सहारे पन्चांगुली देवी यंत्र स्थापित करें, इसके बाद पूर्ण षोड़शोपचार से नौ दिन तक नित्य पूजन कर पन्चांगुली मन्त्र का जप करें।

यह सही है कि आधुनिक समय में प्रत्येक स्थान पर प्रामाणिक सिद्वांत प्राप्त नहीं होते, जो कि यन्त्र का स्वरूप और विधि समझा सकें, परन्तु साधना में प्रामाणिक 'पन्चांगुली यन्त्र' आवश्यक है।

वस्तुतः यह साधना लम्बी और श्रम साध्य है, प्रारम्भ में गणपति पूजन, संकल्प, न्यास, यंत्र, पूजा, प्रथमावरण पूजा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थ, पंचम, षष्ठम्, सप्तम, अष्टम और नवमावरण के बाद भूपतिसंहार करने के बाद यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा, संजीवनी क्रिया करनी चाहिए।

इसके बाद पंचांगुली यंत्र को संजीवनी क्रिया करने के बाद अर्न्मातृका न्यास, कर न्यास, बहिर्मातृका न्यास करनी चाहिए, यद्यपि इस सारी विधि को लिखा जाय तो लगभग चालीस पचास पृष्ठों में आयेगी, यहाँ मेरा उद्देश्य पाठकों को किसी जटिलता से परिचित करवाना नहीं, मात्र इस साधना से एवं उसके लाभ से परिचित कराना है।

देश के श्रेष्ठ साधकों का मत है कि यदि साधक केवल घर में ताम्र पत्र अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पन्चान्गुली यन्त्र स्थापित कर उसके सामने नित्य पन्चान्गुली मन्त्र 21 बार जप करें तो कुछ समय बाद स्वतः पन्चान्गुली साधना का लाभ मिलने लग जाता है।

मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि सही एवं प्रामाणिक तथा प्राण-प्रतिष्ठित पंचागुली यंत्र मिल जाये और व्यक्ति या जातक पूर्ण निष्ठा, आस्था के विधि-विधान सहित यंत्र के समक्ष मंत्र-ध्यान, मंत्र जान करें तो कुछ ही समय में अभिष्ट फल प्राप्त होने लग जाता है। देश के श्रेष्ठ साधको व विद्वानों का भी यही मत है।

पंचांगुली देवी ध्यान-

पन्चांगुली देवी महादेवी श्रीं सीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशोशितः।।

पन्चांगुली देवी यंत्र के सामने यह ध्यान करके निम्न पन्चांगुली मन्त्र का कम से कम 21 बार जप अवश्य करना चाहिए।

नवरात्रि काल में जितना अधिक जाप हो सके उतना शुभ रहेगा।

पन्चान्गुली मन्त्र-

ॐ नमो पन्चांगुली परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडिनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपामध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये गणिमध्ये गारूणीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरण्यमध्ये दुष्मध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे माता पंचांगुली देवी तणोवज्र निर्धार पड़े ऊँ ठं ठं ठं स्वाहा।

नित्य प्रातः नियम पूर्वक यह साधना करने से साधक की आन्तरिक तीव्रता भावना एवं पवित्रता के अनुपात् में सफलता भी एक माह से छः माह के भीतर प्राप्त हो ही जाती है।

यह सुविधाजनक है और इसमें किसी प्रकार की त्रुटि संभव नहीं होती, पाठकों के आग्रह बराबर केन्द्र को प्राप्त होते रहे हैं अतः इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान से सीमित संख्या में सिद्ध कराकर मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त पन्चान्गुली यन्त्र निर्माण किये हैं। इसे केन्द्र से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

वस्तुतः यह साधना सरल है, क्योकि इसमें किसी प्रकार की जटिलता का सामना नहीं करना पड़ता है, मेरा स्वयं का यह अनुभव रहा है और अपने शिष्यों से इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करवाई है और वे इस साधना में सफल हुए हैं। आप भी इस साधना को सम्पन्न कर अपना भावी

भविष्य को देखने में सर्वथा समर्थ पंचागुली साधना

इस घटाटोप अंधकार में यदि प्रकाश की कोई किरण डाली जा सकती है, तो वह पंचांगुली साधना सिद्ध कर व उसके माध्यम से ही यह सम्भव है, इसीलिए पंचांगुली साधना को त्रिकालदर्शी साधना कहा गया है। साधना को सम्पन्न करने पर निम्न तत्वों की उपलब्धि होती है।

1. इस साधना को सिद्ध करने पर अपना भूतकाल और भविष्यकाल साफ-साफ देख पाना संभव होता है। किसी भी पुरुष या स्त्री को देखते ही उसका भूतकाल आंखों के सामने साकार हो जाता है, कि भूतकाल में इसने कब, कहाँ और क्या कार्य किया है, इससे उसके चरित्र और व्यवहार के बारे में पूरा-पूरा पता चल जाता है।
2. इस साधना की सिद्धि से साधक अपने इस जीवन को और पूर्व जीवन को भी साकार देखने की सामर्थ्य पैदा कर लेता है और उसे इस बात का पता चल जाता है कि इस जीवन से पहले का जीवन कैसा था, मै कहाँ पैदा हुआ था, मैंने क्या-क्या कार्य किये थे, और जीवन के कार्यो का इस जीवन में प्रभाव किस प्रकार से प्राप्त हो रहा है। आदि-आदि।
3. इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त होती है, और वह इस क्षैत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
4. पंचांगुली साधना सिद्ध करने पर वह किसी चित्र या फोटो को देखकर भी उसके चरित्र और भूत-भविष्य को बतला सकता है।
5. साधना सिद्ध करने पर वह अपने पारिवारिक जीवन को तो पूर्णतः सफल बना ही सकता है, साथ ही साथ लोक-कल्याण कर दूसरों के जीवन में आने वाली समस्याओं के निराकरण में भी सहायक होता है।